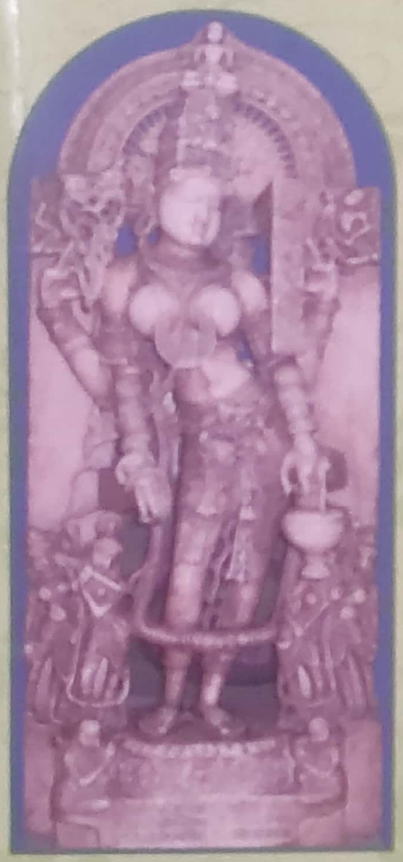

णव-सिजणं

(नव-सृजन)

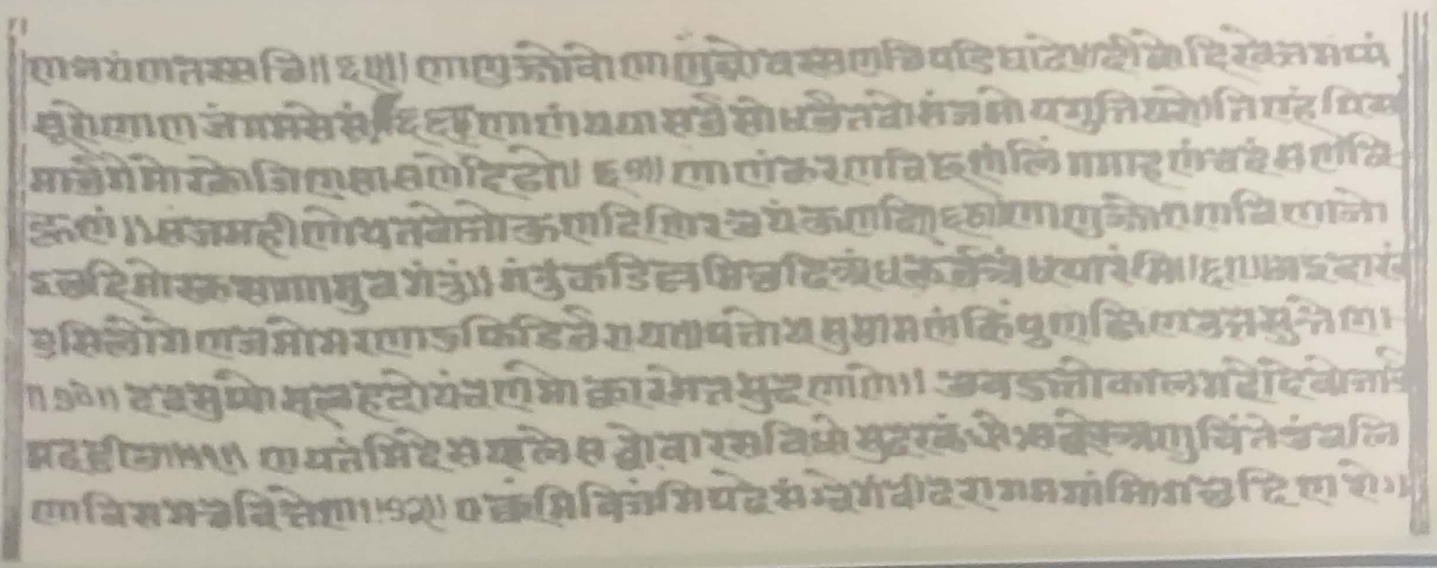

सम्पादक

डॉ. सुमत कुमार जैन

डॉ. वीरचन्द्र जैन

डॉ. दिनेश कुमार मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

णव-सिजणं

(पाइयविज्जाविण्णो प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन
को षष्टिपूर्ति के अवसर पर
समर्पित गौरव-ग्रंथ)

सम्पादक
डॉ. सुमत कुमार जैन डॉ. वीरचंद्र जैन
डॉ. दिनेश कुमार मिश्र

प्रकाशक
प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान
लाडनूं-341306 (राजस्थान) भारत

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 9788195298556

कृति : णव-सिजणं
(प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन को षष्टिपूर्ति के अवसर पर समर्पित गौरव-ग्रंथ)

सम्पादक : डॉ सुमत कुमार जैन
डॉ. वीरचन्द्र जैन
डॉ. दिनेश कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक : डॉ. अरविन्द्र कुमार जैन
डॉ. सुदेश कुमार
डॉ.. राम नरेश जैन

संस्करण : प्रथम आवृत्ति (जून-2022)

मूल्य : 900/-

प्राप्ति स्थान : भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी,
29 विद्या विहार कॉलोनी, उत्तरी सुन्दरवास,
उदयपुर (राजस्थान)

प्रकाशन सहयोगी संस्थाऐं :

1. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद्
पुष्प भवन, पपोरा चौराहा, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)
2. बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ ट्रस्ट
श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)
3. भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी,
29 विद्या विहार कॉलोनी, उत्तरी सुन्दरवास,
उदयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक : प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान
लाडनूं -341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
Website: www.pvjss.com, e_mail:pvjss108@gmail.com

डिजाईन : श्री शरद जैन सुधान्शु, लाडनूं

मुद्रक : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

विद्वद्वरेण्य साहित्यविज्ञ प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, उदयपुर के सम्मानार्थ ग्रन्थ "नव-सिजर्ण" का प्रकाशन किया जा रहा है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हमें इस ग्रन्थ के सम्पादन का उत्तरदायित्व प्राप्त हुआ है। सभी स्नेही मित्रों एवं गुरुओं की सतत प्रेरणा से ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हो पा रहा है। ग्रन्थ के निर्माण हेतु पावन आशीर्वाद परमपूज्य प्राकृतशिरोमणी आचार्यश्री सुनीलसागरजी महाराज, परमपूज्य प्रज्ञाश्रमण अमितसागरजी महाराज एवं परमपूज्य मुनिश्री प्रणम्यसागरजी महाराज और परम-संरक्षक के रूप में परमपूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामीजी, श्रवणबेलगोला का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, साथ ही संरक्षक एवं परामर्श प्रदानकर्ता के रूप में प्रो. प्रेम सुमन जैन, उदयपुर, प्रो. ऋषभचंद जैन, वैशाली एवं प्रो. जय कुमार जैन, मुजफ्फरनगर तथा देश के ख्यातिलब्ध वरिष्ठ विद्वानों से निरन्तर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत कृति 'नव-सिजर्ण' का नामकरण सार्थक और उद्देश्यपूर्ण है। जहाँ एक ओर इस नामकरण में नूतनता का संचार है वहीं दूसरी ओर प्राच्यविद्यानुरागी हमारे गुरुवर का सम्मान है।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में उत्तरदायित्व का निर्वहन गुरुवर्य प्रो. जिनेन्द्र कुमार जी के आशीर्वाद से ही सम्भव हुआ है। अभिनन्दनीय गुरुजी के विराट् व्यक्तित्व और कृतित्व को 'नव-सिजर्ण" ग्रन्थ की सीमित परिधि में निबद्ध करना असंभव था। गुरुजी ने महती कृपा करके अपने शोधलेखों में से कुछ विशिष्ट आलेखों को 'नव-सिजर्ण' ग्रन्थ में प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की है। हमारा निवेदन स्वीकार करके गुरुजी ने अपना जीवन-वृत्त तथा साहित्यिक अवदान प्रदान कर भी हमें उपकृत किया है। यह कार्य उनके द्वारा ही संभव था। उन्होंने अपने इस कार्य को पूरा करने में बड़ा श्रम किया है। ग्रन्थ की प्रूफ रीडिंग का कार्य भी अत्यन्त कठिन था। यह कार्य भी गुरुजी के सहयोग से ही पूर्ण कर पाए हैं। गुरुजी के घर पर मुझे गुरुजी और गुरुमाता श्रीमती मीना जी का असीम वात्सल्य प्राप्त हुआ है।

गुरुजी प्राकृत भाषा, साहित्य एवं जैनविद्या के अनुरागी एवं विश्रुत मनीषी हैं। आपकी जैन विद्वानों के साथ-साथ जैनेतर विद्वानों में आपके कार्यशैली की बड़ी प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि इस ग्रन्थ हेतु जैन विद्वानों के साथ-साथ अनेक जैनेतर विद्वानों ने भी शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। सम्माननीय गुरुजी की निःस्वार्थ श्रुतसेवा और सारस्वत साधना का ही फल है कि उन्हें आचार्य, मुनि एवं भट्टारकजी ने आशीर्वाद प्रदान किया है। इसमें वरिष्ठ मनीषियों ने अपनी शुभकामनाएँ प्रदान की हैं। हम परमपूज्य आचार्य, मुनिश्री, भट्टारकजी एवं वरिष्ठ मनीषियों को सादर नमन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। जिन विद्वानों, साथियों एवं स्नेही साथियों ने अपनी शुभाशंसाएँ प्रेषित की हैं, उनका भी हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। विशेषरूपेण हम हमारे कनिष्ठ एवं वरिष्ठ शोधार्थी साथियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग एवं प्रेरणा से यह दुरूहकार्य परिपूर्ण हो सका है। हमने नव-सिजर्ण ग्रन्थ का सम्पादन यथासंभव मनोयोग से पूर्ण किया है, फिर भी इसमें यदि कुछ त्रुटियाँ शेष रह जाना स्वाभाविक है, तो उनके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

डॉ. वीर चंद्र जैन
सहायक आचार्य
जैनदर्शन एवं प्राकृत विभाग
महारानी महेश्वर सता संस्कृत
विद्यापीठ, लोहना कामेश्वर सिंह
दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. दिनेश कुमार मिश्र
सह-आचार्य,
जैनविद्या
राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, पाली (राजस्थान)

डॉ सुमत कुमार जैन
सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

Scanned with OKEN Scanner